卐 ॐ 卐

नेत्र-रोग-निवारण

PREVENTION
of
BLINDNESS.

प्रकाशकः—

श्री परमानन्द

नेत्र सुधारक संघ

१९४३ करौलबाग़, देहली।

卐 ॐ 卐

बचाइये ! भारतके ६० लाख अन्धोंको !!

सहयोग दीजिये ! श्रीपरमानन्द नेत्र-सुधारक संघको !

उद्देश्य — फैली हुई अन्धताको हर प्रकारसे नष्ट करना, सिद्ध-हस्त डाक्टरों द्वारा नेत्र-चिकित्सा—'चक्षु-दान-यज्ञ' कराना और अनुभूत-दवाओंसे जनताको रोग-मुक्त करना।

हमारी अनुभूत-दवाओंसे लाभ उठाइये !

निम्नलिखित औषधियां सुयोग्य वैद्यों द्वारा शास्त्रानुसार निर्माण होती हैं। श्रीपरमानन्द नेत्र-सुधारक संघ, देहली द्वारा गरीबोंके हितार्थ लागत-मात्र मूल्यमें वितरण की जाती हैं—

१ नेत्र-सुधारक सुरमा(सफेद) २ नयनामृत सुरमा
३ नेत्र-सुधार वर्ती ४ नेत्र-प्रलेप वटी (दुखना)
५ रोहों का शत्रु ६ पीली-दवा (नेत्र-रोग)
७ लाल-दवा (रोहा) ८ नेत्र-नासूर नाशक
९ नेत्र-जल १० नेत्र-विन्दु
११ स्वर्ण-धारा (नेत्र) १२ खाजहारी चूर्ण
१३ दद्रुहारी बटी (दाद) १४ दाद का अर्क
१५ श्वासहारी जड़ी (दमा) १६ खांसी की गोली (गला)
१७ कर्णविन्दुतेल(कान-रोग)१८ दांत-दर्द-दूर (मंजन)
१९ कृमिनाशक बटी (पेट) २० पेट-रोग-हारी बटी
२१ त्रिफला चूर्ण(आंख,पेट)२२ कब्जनाशक चूर्ण
२३ बिवाई-नाशक(मरहम) २४ फोड़ा का शत्रु (मरहम)
२५ बातनाशक तेल(गठिया)२६ मलेरिया-नाशक बटी
२७ ज्वरारि-बटी(मलेरिया)२८ पागल की जड़ी

पता—श्रीपरमानन्द नेत्र-सुधारक संघ, करौलबाग, देहली

卐 ॐ 卐

नेत्र-रोग-निवारण

Prevention is better than cure.

गत कुछ वर्षोंसे हिन्दुस्तानका अन्धापन भयंकर गतिसे बढ़ रहा है। पिछले ३० वर्षोंमें ही यहां अन्धों की संख्या बढ़कर पचास लाख तक हो गई है। इस गम्भीर समस्या को सामने रखते ही प्रश्न उत्पन्न होता है कि अन्धता के कारण क्या हैं। कारण के निवारण से कार्य स्वतः रुक जाता है। अतएव अन्धता निवारण के लिए पहिले उसके कारणों की जानकारी परम आवश्यक है।

यहां नेत्र-रोगों के फैलने का सबसे बड़ा कारण आंखों के हस्पतालों की कमी है। हमारे देश में अन्धों की संख्या को देखते हुए हस्पतालों की संख्या बहुत कम है। इसको बढ़ाना सरकार का कर्तव्य है और हमें इसके लिए बराबर आन्दोलन करते रहना चाहिये।

एक बहुत ही ध्यान देने योग्य बात यह है कि नेत्र के ६०% रोगियों को अन्धता के परिणामों से बचाया जा सकता है और अधिकांश नेत्र-रोगों को सरल उपचार द्वारा हटाया जा सकता है। मोतिया, काला-मोतिया, फूला, पैनस, आदि रोगजन्य अन्धता को साधारण प्रचलित शस्त्र-क्रिया (आपरेशन) द्वारा निवारण किया जा सकता है। अधिकतर नेत्र-रोगी अनावश्यक नेत्र-रोगों से पीड़ित हैं।

नेत्रके सभी रोगोंकी छानबीन करनेसे पता चलता है कि उनके बढ़नेका मुख्य कारण उपेक्षा और अज्ञान है। आंखोंका वास्तविक मूल्य बहुत कम लोग समझते हैं। तकलीफ होने पर उसके उपचार का प्रयत्न नहीं करते। और जो करते भी हैं तो ठीक तरीके से न करके, सुलभ दवाइयां या अञ्जनादि डाल कर आंखों को बिगाड़ लेते हैं। परन्तु नेत्र के महत्व के अनुसार उसका यथोचित इलाज नहीं कराते। जब आंखें किसी तरह ठीक नहीं होती और रोगी को काम काज छोड़ने को लाचार कर देती हैं तो डाक्टर या हकीम याद आता है, और फिर उनका इलाज कठिन या असम्भव हो जाता है। अतः सबको चाहिये कि समय रहते डाक्टर से इलाज कराके किसी भी नेत्र-रोग को बढ़ने न दिया जाय।

नेत्र-रोग-निवारणके न जानने से भी अनेक रोग पैदा होते हैं, बढ़ते हैं और आंखों को नष्ट कर देते हैं। इन सब रोगों के स्वरूप को समझ कर खोज करनी चाहिये ताकि इनको हटाया जा सके और बढ़ते हुए अन्धापन को रोका जा सके। कुछ प्रमुख नेत्र-रोगोंके लक्षण, कारण और निवारण के उपाय नीचे संक्षेपसे बताये जाते हैं:--

१—फूली आंखें (Opthalmia Neonatorum)

यह एक अत्यन्त भयंकर नेत्र-रोग है। प्रायः शिशु अवस्था में आंखें लाल होकर फूल जाती हैं

और अत्यधिक मात्रामें मवाद या ढ़ीढ़ (गीड़) बहने लगती है। यदि अच्छे डाक्टर द्वारा शीघ्र ही इसका उपचार न कराया जाय तो आंख में जख्म उत्पन्न हो जाता है और फूले का रूप धारण कर लेता है, फलस्वरूप अधिकतर तो बालक की ज्योति सदा के लिए विनष्ट हो जाती है। यह रोग छूत से भी बहुत फैलता है और बढ़ता है।

पितृ-दोष या जन्मकाल की किसी अशुद्धि और छूत के कारण यह रोग पैदा होता है। जन्म के समय ही बालक की आंखों में १% सिल्वर नाइट्रेट लोशन डालने से या सरसों के तेल का काजल और सफेदा या नोसादर की मरहम❀ लगाने से यह रोग फिर कभी नहीं हो सकता। आंखें फूलने पर बालक को तत्काल ही अच्छे नेत्र-विशेषज्ञ डाक्टर को दिखा कर इलाज कराना चाहिये।

२—रोहे (Trachoma)

आंखका बहुत ही विस्तृत रोग जिससे संसार में बालक, युवा और वृद्ध अन्धे होते हैं, रोहों का रूप धारण करता है। आंखों में खुजली चलती है, पानी बहता है, ढ़ीढ़ आती है, पलकों के भीतर दाने से होकर पलकें भारी हो जाती हैं। आंखे

❀ नौसादर की जरासी डली व पानी, पीतल की थाली में, हथेली से खूब घिसे। घिसते-घिसते नीले-हरे रंग की मरहम सी बन जायगी, उसे उंगली से आंख में डालें।

बहुत दिन तक दुखती रहती हैं। धूल, धूप, धुआं, गन्दगी और छूत से यह रोग उत्पन्न होता है। यह रोग मक्खी, स्पर्श, उंगली, रुमाल, तौलिया, सलाई, धोती आदि की छूत के कारण शीघ्र ही काफी फैल जाता है। शीघ्र उपचार न करने से दृष्टि मन्द होने लगती है। अधिक बढ़ने पर काली पुतली में भी जख्म हो जाता है और सदा के लिए ज्योति विलीन हो जाती है। हाथ-मुँह की स्वच्छता, छूत से परहेज, धूप में चश्मों का प्रयोग और आरम्भ में ही शुद्ध अरण्डी का तेल डालने से यह रोग रोका जा सकता है। रोग बढ़ने पर दीर्घकाल तक नियमित रूप से चिकित्सा कराने पर भी आराम होना कठिन है।

३—लाल आंखें (Conjunctivitis)

दुखती लाल आंखों को सभी जानते हैं। उपेक्षा से यही साधारण रोग बढ़कर असाध्य हो जाता है। और ज्योति को भी नष्ट कर देता है। आंखें लाल होकर रड़कती हैं, पानी बहता है, पलकें भी लाल हो जाती हैं। आंखों पर दबाव (Strain) पड़ने से, धूल-धूप से, तीक्ष्ण पदार्थ या कीटाणु आंख में पड़ने से अथवा आन्तरिक रक्तविकार से, आंखें दुखने लगती हैं। अधिक समय तक उपेक्षा करने से आंख में जख्म होकर फूला पड़ जाता है और नजर चली जाती है। शुरूमें ही ठंडे जलसे धोनेसे, वाष्प-सेंक,

मलाई, (अक्रिफिलेमन, जिंक, प्रोटार्गल) आदि से अच्छी हो सकती हैं। दुखती आंखों को रगड़ना नहीं चाहिये, लिखना-पढ़ना स्थगित कर देना चाहिये।

४—दृष्टि-हीनता और रतौंधा (Keratomalacia)

प्रायः शहरी बच्चोंमें विशेषतया बंगालमें यह बहुत पाया जाता है। निर्बलता, रतौंधा और धुँधली आंखें इसके लक्षण हैं। (Vitamin A.) 'ए' तत्त्वहीन आहार, दस्त, पेचिश, काला ज्वर या पित्तदोष के कारण यह रोग होता है।

व्यायाम, समुचित आहार, दूध, फल, गाजर, मूली, पालक, शाक-सब्जी आदि के सेवन से दूर होता है और रोका जा सकता है।

५—काला मोतिया या नीला पानी (Glaucoma)

अत्यन्त भयानक और भ्रामक रोग काला मोतिया है। लोग और अनेक डाक्टर मोतिया-बिन्दुके भ्रममें जिसकी उपेक्षा कर, असाध्य बना देते हैं। इसमें मोतिया की भांति नष्ट हुई दृष्टि पुनः किसी तरह भी प्राप्त नहीं हो सकती। अतः आरम्भ में ही आपरेशन कराने से जहां की तहां रुक जाती है।

इसमें आंख कड़ी हो जाती है, दीपक या बिजली की ओर देखने से रंगीन चक्र से दिखाई देते हैं समय-समय पर शिर-दर्द के दौरे उठते हैं। पहिले

देर में और पीछे जल्दी जल्दी उठने लगते हैं। किसी-किसी को शिर में दर्द नहीं होता। दौरे आने से दृष्टि एकदम घटती रहती है। इसका मुख्य कारण आन्तरिक खेद, वेदना, चोट, नाड़ियों का दबाव अथवा अधिक तम्बाकू सेवन है। आरम्भ में ही आपरेशन (Iredechtomy) करने से यह रोग आगे नहीं बढ़ता।

६—मोतिया-बिन्दु (Cataract)

यह वृद्धावस्था का वह रोग है, जिसे सफेद पानी भी कहते हैं और जिसकी चिकित्सा पूर्णतया पकने पर ही हो सकती है। इसमें दृष्टि लुप्त होने पर, जब केवल धूप-छाया दीखती हो, आपरेशन कराने पर पुनः ज्योति-दान मिल जाता है। बाकी सभी रोगों का इलाज शुरू में ही करना चाहिये। मोतिया-बिन्दु में ज्योति धीरे-धीरे कम होती है और नेत्र-तारा के बीच में सफेद सफेद वस्तु दिखाई देती है। इसके रोकने के उपाय भी हैं और कारण विजातीय द्रव्यकी वृद्धि है। किसी प्रसिद्ध नेत्र-सर्जन द्वारा पकने पर आपरेशन करानेसे ज्योति पुनः मिल सकती है।

७—अल्पदृष्टि और अदूरदृष्टि (Myopia)

आजकल अल्पदृष्टि और अदूरदृष्टि की शिकायत घर-घर में फैल गई है। अनियमित या अत्यधिक नेत्र-कार्य से, रुग्णावस्था में पठन-पाठन से,

तत्व-विहीन भोजन से, चोट से या पितृदोष से भी यह पैदा होता है। इसका इलाज भी है और रोक-थाम भी की जा सकती है। निम्नलिखित उपायों को सदैव ध्यान में रखना चाहिये—

१—बाल्यावस्थामें बारीक अक्षर मत पढ़ो।

२—पुस्तक को कम से कम १३ इंच की दूरी से पढ़ो।

३—अति तीव्र या अति मन्द प्रकाश या घटते-बढ़ते प्रकाश में मत पढ़ो।

४—लेट कर या झुक कर कोई नेत्र-कार्य मत करो।

५—दुखती आंखों में लिखना-पढ़ना बन्द कर दो।

८—चेचकान्धता (Small-Pox Blindness)

यहां चेचकके अन्धे बहुत पाये जाते हैं। उनका कोई उपचार भी नहीं हो सकता। चेचक होने पर जैसे सारे शरीर पर फुन्सी हो जाती हैं उसी भांति आंख में भी होते ही ज्योति चली जाती है। चेचक को रोकने के लिए बचपन और महामारी के समय टीका लगवाना ही सर्वोत्तम उपाय है। चेचक होने पर भी सावधानी से स्वच्छता पूर्वक मुंह को, खास कर पलकोंको दिनमें कई बार एसिड बोरिक से धो कर, निरन्तर वेसलीनसे या रेड़ी तेलसे आंखोंको लपेट कर बन्द रखा जाय। ३-३ घंटेमें बोरिक-लोशन आंखोंमें डालते रहें तो अन्धापनकी सम्भावना बहुत कम रह जाती है।

९—सूजाक और आतिशक
(Syphlis & Gonorrhoea)

सूजाक और आतिशक से उत्पन्न हुई अन्धताका कोई इलाज नहीं है। सूजाक के रोगी को अत्यन्त शीघ्र ही सुप्रसिद्ध डाक्टर-वैद्यों द्वारा अपना यथेष्ट उपचार कराना चाहिये। और पूर्ण स्वास्थ्य-लाभ के पूर्व विवाह नहीं कराना चाहिये। विवाह हो भी जाय तो, सन्तान उत्पन्न नहीं करनी चाहिये। अन्यथा रोग का संक्रमण पत्नी व सन्तान पर भी होता है।

१०—भैंगापन (Squint)

भारत में भैंगापन बहुत फैला हुआ है। यह साधारण सा रोग है। और उपेक्षा के कारण से मनुष्य ज्योति-हीन हो जाता है। भैंगे मनुष्य को एक वस्तु की जगह दो दीखती हैं। प्रारम्भ में ही उपचार, व्यायाम और सावधानी करने से, दृष्टि ठीक हो जाती है अन्यथा विलम्ब से अन्धापन भी हो सकता है।

तात्पर्य यह है कि प्रायः सभी नेत्र-रोगों की उत्पत्ति और वृद्धि का मूल कारण अज्ञान, उपेक्षा और प्रमाद है। रोग, कारण और उनकी रोक-थाम के उपाय न जानने से रोग पैदा होते हैं और उपेक्षावश बढ़ते हैं।

प्रकाशक—स्वा० श्रीपरमानन्द नेत्र-सुधारक संघ,
करौलबाग, देहली।
B. R. M.F.No.12.32. 43.Ed.I.3000.

नेत्र-दान— ॐ —पुण्य महान्

'Let there be Sight' —卐— 'Bring Light to the Blind'

चक्षुदान-यज्ञकी अभूतपूर्व योजना !

१।) सवा रुपयेमें नेत्र-दान !!

क्या आपको मालूम है ? भारत पर एक करोड़ अन्धोंका भार लदा है। 'अन्धेको दो आंखें' चाहिए, बस ! इसका उपाय भी मिल गया है। अब तो इस सुन्दर सेवामें केवल आपके शीघ्र सहयोगकी आवश्यकता है। यह विचारणीय बात है। इस सरल, सुलभ, सस्ती योजना से लाखों का भला हो सकता है। अल्प समय में, अनायास साधनोंसे ९८% प्रतिशत सफलता तो आपरेशनमें मिल जाती है। और भारतकी भावी ६०% अन्धताको रोका जा सकता है। दुःखकी बात है कि हमारे विद्यार्थी-गण २५% नेत्र-रोगोंसे ग्रसित हैं। क्या हम इस दयनीय अवस्थाको देखते रहेंगे ? जबकि यूरोप, अमरीकावालोंने इस अन्धता-राक्षसीको उपाय करके दूर भगा दिया है। अतः हमारे सविनय निवेदन पर ध्यान देते हुए, अपनी बहुमूल्य सम्मति-सहयोग, समय-शक्तिको थोड़ी-सी भी लगानेका संकल्प करें। 'वृथा वृष्टि समुद्रेषु', समयकी मांग, देशकी आवश्यकताको देखते हुए, आपके सात्विक-विचारपूर्वक किये हुए ½ दानसे ही यह विराट प्रश्न हल हो सकता है !

भारतकी गरीबी व अज्ञानता तरस खाने योग्य है ! ६०% अन्धता तो गरीब-देहातियोंमें ही घर करे बैठी है। हमें ही उनकी कुटिया तक पहुंचना होगा ! चेत कराकर-दवा देकर—दुःख दूर करना

होगा !! जरा सोचें ! स्वदेशकी शुद्ध-सेवाका कार्य, यह कितना ठोस है ! 'का वर्षा जब कृषि सुखाने' अतः देर क्यों ? जबकि आपकी शक्तियोंके सदुपयोगका सु-अवसर सामने ही उपस्थित है। आप विश्वास करेंगे तो परिश्रमी-योग्य स्वयंसेवक सेवार्थ मिल जायंगे।

अनुभूत योग है ! यह देखिये, कुछ उद्योगसे ही अबतक ५७ आंखों के मेले हो चुके हैं। जिसमें ढाई लाखसे ऊपर पीड़ितोंने लाभ उठाया है। (आपरेशन द्वारा १६२७२, औषध द्वारा ६४६४१, सलाह द्वारा १७७२०६)। कितनी सुन्दर सेवा हो सकती है यह ? काश आपका दिल गवाही दे दे, मन मानले और इन तुच्छ सेवकोंकी पीठ ठोक दे !

सामने सर्दी आ रही है, यह सर्वसुन्दर समय नेत्र-रोग दूर करनेका है। सूझ-बूझके सब साधन जुटे हुए हैं। आपका तीन पैसेका कार्ड, माननीय महानुभावोंकी सम्मतियों सहित सारी योजना आपकी सेवामें उपस्थित कर सकता है।

हम क्या आशा करें ? कब सेवामें उपस्थित हों ? आपकी सहृदयता, दानशीलताका अधिक सदुपयोग देशवासी उठा सके ऐसे उपाय कब सेवा में रखें ? बस ! सेवककी अरजी — अब, दाताकी मरजी !

आपकी प्रसन्नताके लिए, आपका बहुमूल्य समय लेनेवाला। भवदीय उत्तराभिलाषी— प्रधान सेवक,

स्वा० परमानन्द नेत्र-सुधारक संघ,

करौलबाग, देहली।

कैम्प स्थान—(स्टेशन सराय रोहिल्लाके पास ही, तिबिया कालेजके पीछे, तम्बुओंमें)